2 अप्रैल 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

महावीर द्वारा प्रतिपादित धर्म मात्र धर्म नहीं, 'आत्मधर्म' है, जो मोक्ष का मार्ग है, दु:खों से छूटने का उपाय है।
ह्न ती. भगवान महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ, पृष्ठ-97

वर्ष : 31, अंक : 01 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (प्रथम), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

1. **कोटा (इन्द्रविहार) :** यहाँ श्री सीमन्धरस्वामी जिनमंदिर में अष्टान्हिका पर्व के पावन प्रसंग पर दिनांक 14 से 21 मार्च तक जयपुर से पधारे पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन प्रात: आपके द्वारा प्रवचनसार, सायंकाल आत्मानुशासन ग्रन्थ पर तलस्पर्शी प्रवचन हुये।

2. **कोटा (रामपुरा) :** यहाँ अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, कोटा के तत्त्वावधान में पण्डित कमलेशकुमारजी शास्त्री मौ के प्रात: समयसार ग्रंथाधिराज की 31 से 33 वीं गाथा के आधार पर एवं सांयकाल कर्म सिद्धान्त एवं गुणस्थान पर हुए मार्मिक एवं सारगर्भित प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। इस प्रसंग पर आद. बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सान्निध्य में गहन तत्त्वचर्चा का लाभ मिला।

3. **मुम्बई (दादर) :** यहाँ पर्व के अवसर पर विदुषी राजकुमारीजी जैन सनावद द्वारा प्रतिदिन प्रात: भेदज्ञान, दोपहर में धवला ग्रंथ एवं रात्रि में 'धर्म ही विज्ञान, विज्ञान ही धर्म है'ह्न विषय पर मार्मिक कक्षा एवं प्रवचनों ने उपस्थित जन समुदाय का मन मोह लिया।

4. **नकुड़ (सहारनपुर) :** यहाँ पर्व के पावन अवसर पर सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ पर हुए प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।प्रतिदिन सायंकाल बाल कक्षा एवं जिनेन्द्र भक्ति होती थी। रात्रि में पण्डित प्रयंकजी शास्त्री सागर द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। अंतिम दिन भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुये।

ज्ञातव्य है कि विधान का आयोजन श्री विजयजी जैन (रावलपिंडी वाले) और श्री सुशीलजी जैन की ओर से किया गया था। **- विजय जैन**

उद्घाटन एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ नवनिर्मित श्री वीतराग विज्ञान भवन और छात्रावास के उद्घाटन के साथ-साथ श्री महावीरस्वामी जिनमंदिर का 16 वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 28 फरवरी से 2 मार्च, 08 तक सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का झण्डारोहण श्री शिखरचंदजी मोदी परिवार के करकमलों से हुआ।

समारोह में पूज्य गुरुदेव श्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित धन्यकुमारजी भौंरे कारंजा, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ़, डॉ. राकेशजी शास्त्री अलीगढ़, पण्डित अरुणजी मोदी सागर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़ एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई के प्रवचनों का लाभ मिला।

कार्यक्रम के मध्य दिनांक 1 मार्च को भव्य जिनेन्द्र शोभायात्रा का आयोजन किया गया। 2 मार्च को वीतराग-विज्ञान भवन के उद्घाटन समारोह के प्रसंग पर श्री अनंतराय ए. सेठ मुम्बई के करकमलों से नवीन भवन में ध्वजारोहण हुआ। भवन का उद्घाटन ड्रा द्वारा चयनित श्री निखिल सुखानंदजी मोदी परिवार द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुमन निर्मलकुमारजी जैन ने की। मुख्यअतिथि श्री उत्कर्ष राकेश मोदी थे। विशिष्ट अतिथियों के रूप में ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, श्री मुकेशजी देवलाली एवं मुम्बई हाई कोर्ट के न्यायाधीन श्री श्रीषेण डोणगांवकर मंचासीन थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित प्रियंकजी शास्त्री रहली, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी एवं पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर ने सम्पन्न कराये।

मुमुक्षु आश्रम में विधान

कोटा (मुमुक्षु आश्रम) : यहाँ दिनांक 22 मार्च को होली के अवसर पर प्रात: 8 बजे से 12 बजे तक ध्वजारोहण एवं पंचमेरु विधान हुआ। दोपहर में पण्डित कमलेशजी शास्त्री मौ के मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

विधान के समस्त कार्य पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित सन्मतिजी शास्त्री पिड़ावा ने सम्पन्न कराये । सभी कार्य पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

सम्पादकीय – 3

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

एक श्रावक ने नग्न दिगम्बर साधु के दर्शन करते एवं प्रवचन सुनते ही उनके प्रति भक्तिभाव से अभिभूत होकर मन में सोचा ह्न 'महाभाग्य से आज मुझे ऐसे तत्त्वज्ञानी मुनिराज के दर्शन हुए हैं। क्यों न इनसे ही आत्मानुभूति का उपाय पूछ लूँ? ये तो क्षण–क्षण में आत्मावलोकन करते ही हैं। इस विषय को इनसे अच्छी तरह और कौन समझा सकता है ?'

फिर क्या था, उसने तत्काल ही हर्षित होकर मुनिराज से कहा ह्न ''हे गुरुदेव ! आपके अन्तर में रत्नत्रय से परिणत जैसा आत्मा विराज रहा है, कृपया मुझे भी वह बताइये, ताकि आप जैसी आत्मानुभूति मुझे भी हो सके। मैं भी आप जैसा निर्ग्रन्थ बनकर आत्मकल्याण कर सकूँ।''

मुनिराज श्री ने श्रावक की हार्दिक भावना और जिज्ञासा जानकर प्रसन्नता प्रगट की और कहा ह्न ''भाई! आत्मानुभूति के लिए पहले **वस्तुस्वातंत्र्य** को समझना होगा, फिर **पर के कर्तृत्व** के भार से निर्भार होने पर उपयोग स्वत: अन्तर्मुख होने लगेगा। पहले आगम के अभ्यास से, युक्तियों के अवलम्बन से एवं परम्परा गुरु के उपदेश से अपने में परिपूर्ण, पर से अत्यन्त निरपेक्ष ज्ञानानन्दस्वभावी आत्मा की प्रतीति होगी, श्रद्धा होगी; फिर उसमें एकाग्र होने पर अपने आत्मा में ही कारण परमात्मा से स्वत: भेंट हो जायेगी।

इसप्रकार स्वरूप में क्षणिक उपयोग स्थिर होने पर चिदानन्द चैतन्य आत्मा से, कारण परमात्मा से भेंट हो जाती है। इस प्रक्रिया में समस्त सांसारिक क्लेश की जड़ें हिल जाती हैं। यह सब काम चौथे गुणस्थान में हो जाता है। तत्पश्चात् पंचम गुणस्थान में द्वितीय कषाय चौकड़ी अप्रत्याख्यान क्रोधादि के अभाव में एकदेश संयम होता है, जिसमें क्षुल्लक, ऐलक और आर्यिका तक की भूमिका हो जाती है। तत्पश्चात् मुनि भूमिका में आने पर तो क्रोधादि कषायों की तीन चौकड़ी कषाय के अभाव से सब सांसारिक क्लेश जड़ मूल से उखड़ जाते हैं और मुनि क्षण–क्षण में आत्मा के अतीन्द्रिय आनंद का रस पीने लगते हैं। इस सम्यग्दर्शन के साथ होनेवाला ज्ञान सम्यग्ज्ञान कहलाता है और इसी में जमने–रमने का नाम 'निश्चय सम्यक् चारित्र' है। इन्हीं तीनों का एक नाम रत्नत्रय है। ऐसे निश्चय रत्नत्रय के धारी व्यक्ति का बाह्य व्रतादिरूप आचरण व्यवहार चारित्र कहलाता है।

एतदर्थ तुम अभी घर में रहकर ही कुछ दिनों नियमित स्वाध्याय करो। सात व्यसनों की प्रवृत्ति छोड़ो, श्रावक के आठ मूलगुणों का पालन करो। स्वाध्याय से सच्चे देव–शास्त्र–गुरु का, सात तत्त्वों का तथा स्व–पर भेदविज्ञान और आत्मानुभव की प्रक्रिया का ज्ञान होगा। पाँच पापों का स्थूल त्याग होगा, तभी मुनि बनने की योग्यता का विकास होगा, ऐसी योग्यता विकसित होने पर ही मुनिव्रत लेना उचित है।

मुनि की उक्त भूमिका में अहिंसा, सत्य आदि पाँच महाव्रत, ईर्या– भाषा–ऐषणा आदि पाँच समितियाँ, पाँच इन्द्रिय विजय, षट् आवश्यक तथा अदन्तधोवन, अस्नानव्रत, भूमि शयन, केशलोंच, नग्नता, एक बार खड़े रहकर आहार लेना ह्न ये शेष सात गुण मिला कर कुल २८ मूलगुणों का निर्दोष पालन सहज होने लगता है। इनके अतिरिक्त मुनिराज की भूमिका में अनेक उत्तर गुणों का पालन सहज होने लगता है। उन उत्तर गुणों में कुछ इसप्रकार हैं। जैसे वे क्षुधा–तृषा आदि २२ परिषह जीतते हैं, उपसर्ग सहते हैं, १२ प्रकार के तप करते हैं। उत्तमक्षमा आदि १० धर्मों की आराधना एवं १२ भावनाओं का चिन्तन निरन्तर करते हैं।

इसप्रकार चैतन्यस्वभाव में एकाग्रता द्वारा जो मुनि मुक्ति की साधना करते हैं, वे साधु परमेष्ठी हैं। उनको प्रत्येक अन्तर्मुहूर्त में आत्मानुभव होता है।

ऐसे साधु होने की पूर्व भूमिका में सर्वप्रथम सम्यग्दर्शन होता है, तत्पश्चात् अन्तर में विशेष वैराग्यपूर्वक, सर्वसंग त्यागी होकर, अन्तरस्वभाव में एकाग्रता के उग्र पुरुषार्थ द्वारा चारित्र दशा प्रगट करके मुनि होते हैं। ऐसे भावलिंग सहित द्रव्यलिंगी मुनि हुए बिना मुक्ति नहीं होती। अत: अंतत: मुनिपद तो लेना ही होगा, किन्तु सम्यग्दृष्टि अपनी शक्ति और श्रद्धा को विचार कर विवेकपूर्वक ही मुनिव्रत लेते हैं, भावुकता में जल्दी नहीं करते। भावलिंग के साथ जो दिगम्बरत्व होता है, वही सच्चा द्रव्यलिंग है। ध्यान रहे, 'द्रव्यलिंगी' शब्द कोई अपशब्द नहीं है। भावलिंग के साथ द्रव्यलिंग तो अनिवार्य है ही।''

आचार्यश्री ने आगे कहा ह्न ''अहा ! मुनिपद तो अलौकिक पद है, मुनिराज पंचपरमेष्ठी पद में विराजमान हैं। अत: मुनि पद ग्रहण कर्ता की बड़ी भारी जिम्मेदारी है। एतदर्थ आचार्यों ने मुनि के स्वरूप को समझाते हुए अपने–अपने संघों के मुनियों को बहुत सावधान किया है।''

श्रावक ने आचार्यश्री का महान उपकार मानते हुए संकोच के साथ निवेदन किया ह्न ''गुरुदेव ! आपने जो मुनि के आचरण संबंधी मूलगुणों एवं उत्तरगुणों की चर्चा की और उन्हें मुनि को निर्दोष पालन करना अनिवार्य बताया। सो क्या इस पंचमकाल में और हम जैसे हीन संहननवालों से मुनि धर्म का निर्दोष निर्वाह संभव है ? मैं इसे धारण कर सकता हूँ ? आपने जो विधि बताई, मैं उस विधि

पूर्वक ही मुनि बनूँ ह्न ऐसी मेरी भावना है।''

आचार्यश्री ने समाधान किया ह्न ''हे भव्य ! तेरी भावना उत्तम है, शास्त्रों के कथनानुसार पंचम काल के अन्त तक भी भावलिंगी मुनि होते रहेंगे। अत: तू निराश मत हो। तेरी भावना अवश्य पूरी होगी। परन्तु इस बात का ध्यान रख कि ह्न **'सत्य को समझने की जरूरत है। सत्य में समझौता और समन्वय संभव नहीं है। अत: मुनिपद जैसा ऊँचा पद लेकर शिथिलता संभव नहीं है। मुनिपद न लेने का अल्पदोष है और मुनिपद लेकर शिथिल होना बड़ा अपराध है, पापबंध का कारण है।** अत: जल्दी मत कर ! अपनी शक्ति को देख कर जितना निभ सके, उतना अवश्य कर !

एक बात यह भी है कि जो जिस काम को करने का संकल्प कर लेता है, ठान लेता है; वह उस काम को कर गुजरता है और वह उसमें उग्र पुरुषार्थ से सफल भी होता है।

दूसरी मुख्य बात यह भी है कि ह्न 'आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने प्रवचनसार, नियमसार एवं अष्टपाहुड़ में जो निर्देश दिए हैं, वे सब पंचमकाल के मुनियों के लिए ही दिए हैं। अतएव आचार्यों ने मुनि के यथार्थ स्वरूप कोसमझने हेतु आगम में मुनि के स्वरूप का कथन परवर्ती होनेवाले मुनिराजों के लिए ही किया है।

मुनिराज तो उसे पढ़ते ही हैं, गृहस्थ भी मुनिपद की महिमा से परिचित हों, एतदर्थ वे भी प्रस्तुत विषय को समझने का प्रयास अपनी मर्यादा में रह कर करते हैं।

अत: मुनिव्रत लेकर शिथिलता के कारण गृहस्थों द्वारा आलोचना के पात्र बनना निन्दनीय भी है और पापबंध का कारण तो है ही।'

मुनि के भावलिंग की प्रमुखता बताते हुए कुन्दकुन्द ने कहा है ह्न

'मुनियों के भावलिंग प्रमुख होता है, इसीलिए हे भव्य ! तुम भावलिंग को पहिचानो; क्योंकि गुण और दोषों का कारणभूत भावलिंग ही है।

बाह्य परिग्रह आदि का त्याग भावों की विशुद्धि के लिए किया जाता है; परन्तु आभ्यन्तर परिग्रह रागादिक हैं, रागादिक के सद्भाव में बाह्य परिग्रह का त्याग निष्फल है तथा आभ्यन्तर मिथ्यात्व और रागादि छूटने पर बाह्य परिग्रह तो स्वत: छूट ही जाता है।

जन्म–जन्मान्तरों में कोड़ाकोड़ि काल तक हाथ लम्बे लटकाकर वस्त्रादिक का त्याग करके तपश्चरण करे, तो भी भावरहित को सिद्धि नहीं होती है। इसलिए यह भी कहा है कि ह्न 'हे शिवपुरी के पथिक ! प्रथम मुनियों के भावलिंग को जान, भावरहित लिंग से तुझे क्या प्रयोजन है ?'

श्रावक एवं साधुधर्म का समन्वय करते हुए आचार्य कुन्दकुन्द देव ने कहा है कि ह्न

दाणं पूजा मुक्खं सावयधम्मो ण तेण विणा।
झाणाझयणं मुक्खं जइधम्मं ण तं विणा तहा सो वि।।
तच्चवियारणसीलो मोक्खपहाराहणसहावजुदो।
अणवरयं धम्मकहापसंगादो होइ मुणिराओ।।

दान व पूजा के बिना श्रावक धर्म नहीं होता; और ध्यान व अध्ययन साधुओं को प्रधान है, इनके बिना यतिधर्म नहीं होता।

जो मुनिराज सदा तत्त्वविचार में लीन रहते हैं, मोक्षमार्ग की आराधना करना जिनका स्वभाव है और जो निरन्तर धर्मकथा में लीन रहते हैं अर्थात् यथावकाश रत्नत्रय की आराधना व धर्मोपदेशादिरूप दोनों प्रकार की क्रियाएँ करते हैं, वे यथार्थ मुनि हैं।'

'जो सदा ज्ञान व दर्शन में प्रतिबद्ध रहते हैं और बाह्य में मूलगुणों में प्रयत्नशील होकर विचरण करते हैं, वह परिपूर्ण श्रामण्यवान् है।'

'धर्म से परिणमित स्वरूपवाला आत्मा यदि शुद्धोपयोग युक्त हो तो मोक्षसुख को प्राप्त करता है और यदि शुभोपयोगवाला हो तो स्वर्गसुख को प्राप्त करता है; इसलिए शुभोपयोगी के भी धर्म का सद्भाव होने से श्रमण हैं, किन्तु वे शुद्धोपयोगियों के समान कोटि के नहीं हैं; क्योंकि उच्च शुद्धोपयोगी निरास्रव ही है और शुभोपयोगी कषाय कण के विनष्ट न होने से सास्रव हैं।' बनारसीदासजी ने मुनि की महिमा में कहा है कि ह्न

'ग्यान कौ उजागर, सहज–सुखसागर।
सुगुन–रतनागर, विराग–रस भर्‌यो है।।
सरन की रीति हरै, मरन कौ न भै करै।
करन सौं पीठि दे, चरन अनुसर्‌यो है।।
धरम कौ मंडन, भरम को विहडंन है।
परम नरम ह्वै कै, करम सौं लर्‌यो है।।
ऐसौ मुनिराज, भुविलोक में विराजमान।
निरखि बनारसी, नमस्कार कर्‌यो है।।५।।

अर्थात् जो ज्ञान के प्रकाशक हैं, साहजिक आत्मसुख के समुद्र हैं, सम्यक्त्वादि गुणरत्नों की खान हैं, वैराग्य–रस से परिपूर्ण हैं, किसी का आश्रय नहीं चाहते, मृत्यु से नहीं डरते, इन्द्रिय–विषयों से विरक्त होकर चारित्र पालन करते हैं, जिनसे धर्म की शोभा है, जो मिथ्यात्व का नाश करनेवाले हैं, जो कर्मों के साथ अत्यन्त शान्तिपूर्वक लड़ते हैं; ऐसे साधु को पण्डित बनारसीदासजी नमस्कार करते हैं।'

इतना कहकर आचार्यश्री ने आज प्रवचन को विराम दे दिया।

आचार्यश्री का मुनिधर्म साधन की प्रक्रिया से संबंधित सारगर्भित सामयिक प्रवचन सुनकर सम्पूर्ण सभा आनन्दित और गद्‌गद हो गई। अन्त में जिनवाणी की स्तुति के साथ धर्म सभा विसर्जित हुई। ●

डॉ. भारिल्ल एवं कु. अनुप्रेक्षा शास्त्री का 2008 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 25 वीं विदेश यात्रा है। उनके साथ कुमारी अनुप्रेक्षा शास्त्री भी जा रही है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्नस्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन एवं फैक्स नं.दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे। उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

क्र.	शहर	सम्पर्क–सूत्र	दिनांक
1.	लॉसएंजिल्स	**Naresh Palkhiwala (R) 562-404-1729 (O) 626-814-8425 ext.8725 naresh.palkhiwala@westcov.org**	6 से 12 जून
2.	सान् फ्रांसिस्को	**Ashok Sethi (R) 408-517-0975 ashok_k_sethi@yahoo.com Vikas Jain 903-366-6524 vikasnd@gmail.com**	13 से 19 जून
3.	मियामी	**Mahendra Shah (R) 305-595-3833 (O) 305-371-2149 E-mail : bhitap@bellsouth.net**	20 से 25 जून
4.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088 Bipin Bhayani (O) 815-939-3190 (R) 815-939-0056 (F) 815-939-3159**	26 जून से 6 जुलाई
5.	जेम्सनविल	**Dhara Bhavin Ajmera (R) 9043027643, (M) 9044774308 E-mail : ajmera_dhara@yahoo.com**	7 से 11 जुलाई
6.	वाशिंगटन डी.सी.	**Narendra Jain (R) 703-426-4004 E-mail : jainnarendra@hotmail (F) 703-321-7744**	12 से 16 जुलाई
7.	न्यूयार्क	**Abhay Kantilal Kothari E-mail : u3a14@aol.com ukothari@verizon.net 516-352-5588 (R) 212-398-7877 (O)**	17 से 18 जुलाई
8.	डलास	**Atul Khara (R) 972-867-6535 (O) 972-424-4902 (F) 972-424-0680 E-mail : insty@verizon.net**	19 से 23 जुलाई
9.	लंदन	**Bhimji Bhai Shah 192-384-0833 bhimji@hevika.com**	24 से 30 जुलाई

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली भी कुछ वर्षों से धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

19 जून से 26 जून – **डलास**, 27 जून से 1 जुलाई – **ह्यूस्टन**, 2 से 8 जुलाई – **शिकागो**, 9 से 16 जुलाई – **सान् फ्रांस्कोसिस**, 17 से 23 जुलाई – **अटलान्टा**, 24 से 27 जुलाई **रिले**, 28 जुलाई से 3 अगस्त – **मियामी**, 4 से 11 अगस्त – **टोरन्टो**।

आप उन्हीं स्थानों पर रुकेंगे, जहाँ डॉ. भारिल्ल रुकेंगे। अतिरिक्त स्थान ह्न ह्यूस्टन में भूपेश सेठ–281–261–4030, अटलान्टा में महेन्द्र दोसी–770–442–8559, रिले में किरीट शाह–**E-mail : kirit125@yahoo.com**, टोरन्टो में संजय जैन – 905–686–5245 ।

महावीर विद्यानिकेतन ह्न
शुभारंभ एवं साक्षात्कार

नागपुर (महा.) : यहाँ आचार्य कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा नवनिर्मित श्री वीतराग–विज्ञान भवन में इस वर्ष **जून माह** से महावीर विद्या निकेतन का शुभारंभ किया जा रहा है। इस वर्ष विद्यालय में **कक्षा सातवीं और आठवीं** में कुल 20 छात्रों को प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेश की योग्यता हेतु पिछली कक्षा में न्यूनतम 60 प्रतिशत अंक एवं अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। इन विद्यार्थियों को नागपुर के उत्तम विद्यालयों में प्रवेश दिलाया जायेगा। ये सभी छात्र श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक **पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर** और **पण्डित प्रसन्न शेट्टे कोल्हापुर** के निर्देशन में अध्ययन करेंगे।

नागपुर में 11 मई से 18 मई, 08 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस शिविर में ही महावीर विद्या निकेतन में प्रवेश इच्छुक छात्रों का साक्षात्कार लिया जायेगा। प्रवेश के इच्छुक छात्रों को इस शिविर में उपस्थित रहना अनिवार्य है।

प्रवेश के इच्छुक छात्र और उनके अभिभावक आवेदन प्रपत्र और अन्य जानकारी प्राप्त करने हेतु निम्न पते पर सम्पर्क करें।

ह्न जयकुमार देवडिया/सुदीप जैन/अशोक जैन
श्री महावीर विद्या निकेतन, श्री महावीरस्वामी दि. जैन मंदिर, नेहरु पुतला के सामने, इतवारी, नागपुर। मो. 9371270638

वैराग्य समाचार

जयपुर निवासी श्रीमती सुनयनादेवी पाटनी धर्मपत्नी श्री ताराचंदजी पाटनी का दिनांक 7 मार्च, 08 को देहावसान हो गया। आप धर्मपरायण, व्यवहार कुशल, मृदुभाषी महिला थी। आप मानव सेवा के साथ ही धार्मिक कार्यों में हमेशा रुचि लेती थी।

आपकी स्मृति में जैन पथप्रदर्शक को 200/– रुपये की राशि प्राप्त हुई है; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो ह्न यही हमारी मंगल कामना है।

बद्रीनाथ के पट 8 मई को खुलेंगे

हिमालय की गोद में समाहित आदिनाथ निर्वाण स्थली अष्टापद बद्रीनाथ क्षेत्र आज देश में ही नहीं वरन् विदेशों में भी लोकप्रिय है। यहाँ आनेवाले यात्रियों के लिये आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था उपलब्ध है। क्षेत्र के पट वर्ष में 6 माह यात्रियों के दर्शनार्थ खुले रहते हैं। इस वर्ष अष्टापद के पट 8 मई से 14 अक्टूबर, 08 तक खुले रहेंगे। क्षेत्र की वंदनाकर पुण्यार्जन करें। ह्न जिनेन्द्र जैन, मो.9406608602

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का ह्न

उन्तीसवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

तीर्थधाम मंगलायतन में

(रविवार, दिनांक 25 मई 2008)

अधिवेशन के पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मीटिंग 24 मई, 08 को तीर्थधाम मंगलायतन में आयोजित की गई है, जिसमें फैडरेशन द्वारा अभी तक किये गये कार्यों की समीक्षा एवं आगामी कार्यक्रमों की योजना पर विचार किया जायेगा।

अधिवेशन में सभी शाखाओं के अधिक से अधिक सदस्यों को उपस्थित होना है। शाखायें कम से कम 2 प्रतिनिधि अधिवेशन हेतु अवश्य भेजें।

अपने पहुँचने की पूर्व सूचना निम्नलिखित पतों पर देवें ह्न

केन्द्रीय कार्यालय ह्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, ए–4, बापूनगर, जयपुर ह्न15

कार्यक्रम स्थल ह्न

तीर्थधाम मंगलायतन, आगरा अलीगढ़ मार्ग, डी.पी.एस. के सामने, सासनी, जिला ह्न महामायानगर (उ. प्र.)

पत्र सम्पादक संघ का अधिवेशन दिल्ली में

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज ससंघ के पावन सान्निध्य में 25 अप्रैल, 08 को बाहुबली एन्क्लेव स्थित दि. जैन मंदिर के सभा भवन में अपरान्ह 2 बजे आयोजित हो रहा है। इसके पूर्व अपरान्ह 1 बजे नए अध्यक्ष का चुनाव व कार्यकारिणी का गठन किया जायेगा। सभी सदस्यों के आवास व भोजनादि की समुचित व्यवस्था की गई है। अपने रिजर्वेशन अभी से करा लें।

स्मरण रहे कि पूर्व में यह अधिवेशन भ. महावीर की जन्मभूमि वैशाली में 16 से 18 अप्रैल को होना प्रस्तावित था; परन्तु महावीर जयन्ती के कारण सदस्यों ने वहाँ पहुँचने में असमर्थता व्यक्त की। इस कारण कार्यक्रम में यह परिवर्तन करना पड़ा। आपके पधारने की सूचना 09929655786 पर संस्था के महामंत्री अखिल बंसल को अवश्य दें।

पत्र सम्पादक संघ की सद्भावना यात्रा

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ के 11 सदस्य दल की एक सद्भावना यात्रा भ. महावीर की पावन जन्मस्थली वैशाली के लिये रवाना हो रही है। यह दल 16 से 18 अप्रैल तक वहाँ रहेगा तथा भ. महावीर के जन्मस्थान के सम्बंध में शोध–खोज कर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।

ह्न अखिल बंसल (महामंत्री)

फैडरेशन के अप्रैल माह के कार्यक्रम ह्न

अप्रैल माह में आनेवाली तीर्थंकरों की मोक्ष कल्याणक तिथियों पर सामूहिक पूजन का आयोजन करें। (दिनांक 6 अप्रैल को भगवान अनंतनाथ एवं अरनाथ, 10 अप्रैल को भगवान अजितनाथ, 16 अप्रैल को भगवान सुमतिनाथ का मोक्षकल्याणक है।)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की सभी शाखायें **दिनांक 18 अप्रैल, 08** को भगवान महावीर की जन्म जयन्ती उत्साह पूर्वक मनायें। इस अवसर पर समाज द्वारा आयोजित शोभायात्रा समारोह एवं अन्य कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लेवें।

शोभायात्रा में भगवान महावीर से सम्बन्धित शिक्षाओं की तख्तियाँ लेकर चलें एवं सत्साहित्य का वितरण करें। सभी पुरुष सदस्य सफेद कुर्ता–पजामा एवं महिलायें केसरिया साडी पहनकर चलें।

जयन्ती की पूर्व संध्या पर भगवान महावीर के जीवन–दर्शन पर परिचर्चा/विचार गोष्ठी का आयोजन करें।

कार्यक्रम के समाचार जैनपथप्रदर्शक में प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें।

पाटनीजी का साहित्य गुजराती में

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग के अनन्य सहयोगी अध्यात्मरसिक वयोवृद्ध विद्वान स्व. नेमीचन्दजी पाटनी ने स्वामीजी का अनेक वर्षों तक साक्षात् समागम प्राप्तकर तथा निरन्तर निजी स्वाध्याय करके जिनवाणी का जो रहस्य उनके चिन्तन में आया, उसे उन्होंने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में स्वान्त:सुखाय लिखा; जो सुखी होने का उपाय भाग–1 से 6 तथा आत्म सम्बोधन, वस्तुस्वातन्त्रय आदि पुस्तकों के रूप में उपलब्ध है।

इनमें से **1.** निर्विकल्प आत्मानुभूति से पूर्व (पृष्ठ–128), **2.** अपनत्व का विषय (पृष्ठ–92), **3.** भेदविज्ञान का यथार्थ प्रयोग (पृष्ठ–35), **4.** सिद्धस्वभावी ध्रुव की मुख्यता (पृष्ठ–54) ह्न इन चार पुस्तकों का पण्डित रमणिकलालजी सावला की प्रेरणा से श्री मणिलालजी गाला ने गुजराती में अनुवाद करके प्रकाशित किया है। इन सभी पुस्तकों का विषय इनके नामानुसार ही है। सभी पुस्तकें स्वाध्याय हेतु बिना मूल्य रखी गई है।

ह्न **बच्चूभाई पारिख**, विलेपार्ले, मुम्बई, मो. 09821508893

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट – एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

भगवान महावीर और उनके अनुयायी युगपुरुष कानजी स्वामी

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर

यह तो आप सबको विदित ही है कि आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी ने भगवान पार्श्वनाथ के जिनबिम्ब के सामने भगवान महावीर के जन्मदिवस पर दिगम्बर धर्म स्वीकार किया था। अतः उनका धार्मिक जन्म तो इसी दिन हुआ था। यही कारण है कि आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली प्रतिवर्ष मनाये जाने वाला उपकार दिवस महावीर जयन्ती के अवसर पर मनाने जा रहा है। इसका लाभ यह है कि हम भगवान महावीर और उनके अनुयायी आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के उपकारों को एक साथ अभिव्यक्त कर सकेंगे।

भगवान महावीर पूर्ण वीतरागी-सर्वज्ञ साक्षात् परमात्मा थे। वे युगान्तकारी अलौकिक दिव्य महापुरुष थे। उन्होंने तत्कालीन युग को प्रभावित ही नहीं किया, वरन् उस युग में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन प्रस्तुत कर दिया। उनके युगान्तकारी आलोक का प्रभाव आज भी विद्यमान है। वे युग-युग तक आलोक प्रदान करने वाले दीप्तिमान दिवाकर थे। स्याद्वाद-वाणी में अनेकान्तात्मक वस्तु का जो स्वरूप उनके द्वारा प्रतिपादित हुआ, वह आज भी आत्मार्थियों का पथ आलोकित कर रहा है।

भगवान महावीर ने प्रत्येक वस्तु की पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा की और यह भी स्पष्ट किया कि प्रत्येक वस्तु स्वयं परिणमनशील है। उसके परिणमन में परपदार्थ का कोई हस्तक्षेप नहीं है। यहाँ तक कि कोई तथाकथित परमपिता परमेश्वर (भगवान) भी उसकी सत्ता का कर्त्ता-हर्त्ता नहीं है। जन-जन की ही नहीं, अपितु कण-कण की स्वतंत्र सत्ता की उद्घोषणा तीर्थंकर महावीर की वाणी में हुई।

दूसरों के परिणमन या कार्य में हस्तक्षेप करने की भावना ही मिथ्या, निष्फल और दुःख का कारण है; क्योंकि सब जीवों के जीवन-मरण, सुख-दुःख स्वयंकृत व स्वयंकृत-कर्म के फल हैं। एक को दूसरे के सुख-दुःख, जीवन-मरण का कर्त्ता मानना अज्ञान है।

भगवान महावीर ने कर्त्तावाद का स्पष्ट निषेध किया है। कर्त्तावाद के निषेध का तात्पर्य मात्र इतना नहीं है कि कोई शक्तिमान ईश्वर जगत् का कर्त्ता नहीं है; अपितु यह भी है कि कोई भी द्रव्य किसी दूसरे द्रव्य का कर्त्ता-धर्ता नहीं है। किसी एक महान शक्ति को समस्त जगत का कर्त्ता-धर्ता मानना एक कर्त्तावाद हैं, तो परस्पर एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य का कर्त्ता-धर्त्ता मानना अनेक कर्त्तावाद।

भगवान महावीर की वाणी का प्रतिपादन केन्द्रबिन्दु एकमात्र भगवान आत्मा है। यद्यपि उनकी वाणी में आनुशंगिक रूप से अनेक विषय आये हैं; तथापि घूम-फिर कर सभी एक आत्मा पर ही केन्द्रित हो जाते हैं।

धर्म परिभाषा नहीं, प्रयोग है और जीवन है धर्म की प्रयोगशाला। भगवान महावीर परिभाषाएँ रटकर धर्मात्मा नहीं बने थे, उन्होंने उसे जीवन में उतारा था। भेद-विज्ञान के बल से समस्त परपदार्थों से भिन्न निजात्मा को जानकर, मानकर, अनुभव कर वे उसी में जम गये थे, रम गये थे, समा गये थे।

और जब वे वीतरागी-सर्वज्ञ हो गये तो उनकी दिव्यवाणी में अनेकात्मात्मक वस्तु का सही स्वरूप स्याद्वाद शैली में सहज ही प्रस्फुटित हुआ था। उन्होंने अपनी मान्यताएँ बलात् किसी पर थोपी नहीं। अपने मत के प्रचार के लिए वे किसी से लड़े-झगड़े नहीं, वाद-विवाद के अखाड़ों में नहीं उतरे। वे तो जगत से पूर्णतः अलिप्त ही रहे। उनका आचरण पूर्णतः अहिंसक रहा। उन्होंने न किसी का बुरा किया, न किसी को भला-बुरा कहा; यहाँ तक कि उन्होंने तो किसी का भला-बुरा सोचा भी नहीं। अहिंसात्मक आचार, अनेकान्तात्मक विचार, स्याद्वादमयी वाणी एवं अपरिग्रही जीवन ही उनके जीवन के अभिन्न अंग रहे।

आज से 2546 वर्ष पहिले जो पथ विपुलाचल पर भगवान् महावीर ने दिखाया था ह्न उसी पथ के एक पथिक हैं युगपुरुष श्रीकानजी स्वामी; जिन्होंने वर्तमान में आध्यात्मिक जगत को सर्वाधिक प्रभावित किया है।

युगपुरुष उसे कहते हैं जो युग को एक दिशा दे, भ्रमित युग को सन्मार्ग दिखाए; मात्र दिखाए ही नहीं, एक वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न करके जगत को उस पर विचार करने के लिए बाध्य कर दें। यदि वह क्रान्ति आध्यात्मिक हो और अहिंसक उपायों द्वारा सम्पन्न की गई हो तो उसका महत्व और भी बढ़ जाता है।

कानजीस्वामी एक ऐसे युगपुरुष हैं, जिन्होंने अपने जीवन में तो परिवर्तन किया ही; साथ ही जैन जगत में भी आध्यात्मिक क्रान्ति उत्पन्न कर दी और बाह्य क्रियाकाण्ड में उलझे हुए समाज को भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित शाश्वत शान्ति की प्राप्ति का सन्मार्ग दिखाया। उन्होंने सोते हुए समाज को मात्र जगाया ही नहीं; वरन् उसे मानव-जीवन की सफलता एवं सार्थकता पर विचार करने के लिए झकझोर कर सचेत कर दिया एवं अपनी पूर्वाग्रहग्रस्त मान्यताओं पर एक बार पुनर्विचार करने के लिए बाध्य कर दिया है।

वे इस युग के वे बहुचर्चित महापुरुष हैं। चाहे पक्ष में हो चाहे विपक्ष में, जैन समाज में आज जितनी चर्चा उनके बारे में चलती हैं, अन्य किसी के बारे में नहीं।

जैन समाज के प्रसिद्ध तटस्थ विद्वान सिद्धान्ताचार्य पंडित कैलाशचन्दजी, वाराणसी 29 जुलाई, 1976 के जैन सन्देश के सम्पादकीय में लिखते हैं :ह्न

''कोई स्वीकार करे या न करें, किन्तु यदि कभी किसी तटस्थ

इतिहासज्ञ ने जैन समाज के इन तीन दशकों का इतिहास लिखा तो वह इस युग के इस काल को ''कानजी युग'' ही स्वीकार करेगा। क्योंकि वह जब इस समय के पत्रों को उठाकर देखेगा तो उसे उन पत्रों की चर्चा का प्रधान विषय कानजीस्वामी ही दृष्टिगोचर होंगे। पत्रों में विरोध भी उसी का होता है, जिसका कुछ विशेष अस्तित्व होता है। विरोध से ही व्यक्ति का व्यक्तित्व आँका जाता है। जो उस विरोध में भी अड़िग रहता है, वहीं उसकी महत्ता का सूचक होता है।''

स्वामीजी सच्चे अर्थों में युगपुरुष हैं; क्योंकि उन्होंने युग को आन्दोलित किया है। वे युग से नहीं, युग उनसे प्रभावित हुआ है। इस भौतिकतावादी युग में जहाँ आज का मानव भौतिक चमक-दमक में उलझकर रह गया है, युग के प्रवाह में बह गया है, उसके प्रभाव से अछूता नहीं रह सका है; वहाँ आप पर इस अधोगामी युग का कोई प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता, अपितु आपके द्वारा प्रवाहित आध्यात्मिक क्रान्ति की धारा ने लाखों लोगों का जीवन बदल दिया है। सैकड़ों युवक-युवतियों ने ब्रह्मचर्य धारण किया है, हजारों लोगों ने गहरा तात्विक अभ्यास किया है, एवं लाखों-लाखों लोगों ने आध्यात्मिक चर्चा में रस लेना आरम्भ कर दिया है।

बम्बई जैसी **मोहमयी माया नगरी** में जब आपके आध्यात्मिक प्रवचन होते तो ज्येष्ठ की दोपहरी में दिन में तीन बजे की भीषण गर्मी में भी बीस-बीस हजार का जन-समुदाय मंत्र मुग्ध होकर लगातार महीनों तक सुनता था और आधा घंटा पहिले से आपकी सभा में उपस्थित रहता था।

राग से भिन्न आत्मा की गूढ़ चर्चा में इतनी विशाल जनता का इतना रुचिवंत होना अपने आप में एक आश्चर्य है, जो आपके युग-पौरुषत्व को सहज ही सिद्ध कर देता है।

बाह्य क्रियाकाण्ड और वेष के नाम पर भोली जनता को प्रभावित कर लेना, 'धर्म खतरे में है' का नारा देकर उत्तेजित कर देना ह्न एक बात है और गहन तात्त्विकचर्चा एवं अनुत्तेजित प्रवचन शैली से जगत में शान्त-आध्यात्मिक वातावरण पैदा करना - दूसरी बात। स्वामीजी ने क्रियाकाण्ड, मंत्र-तंत्र और वेश के बल पर नहीं; अजस्र ज्ञानाभ्यास के बल पर महावीर की वाणी के मर्म को उद्घाटित कर जगत को जागृत किया है।

स्वामीजी ने नया कुछ नहीं कहा। वे तो भगवान् महावीर की वाणी में समागत एवं कुन्दाकुन्दादि आचार्यों द्वारा प्रतिपादित वाणी का मर्म ही अपनी सीधी-सादी सरल भाषा में उद्घाटित करते रहे।

स्वयं की लेखनी से कुछ भी न लिखकर सिर्फ वाणी के बल पर जगत को इतना अधिक प्रभावित करने वाले भगवान महावीर तो थे ही, उनके बाद भी अनेकानेक आचार्य, मुनि व विद्वद्वर्य हुए; पर वर्तमान युग में स्वामीजी ही एक ऐसे युगपुरुष हैं, जिन्होंने एक अक्षर न लिखकर सिर्फ वाणी के बल पर इतनी बड़ी क्रान्ति कर दी है। यह अपने आप में एक आश्चर्य है।

आश्चर्यों के निधान युगपुरुष कानजीस्वामी की कार्यशैली भी अद्भुत है। यद्यपि वे प्रवचन तत्त्वचर्चा के अतिरिक्त कुछ भी नहीं करते; तथापि उनके प्रभाव से, पुण्य-प्रताप से हो रहे तत्त्व-प्रचार और सहज हो रही वीतराग मार्ग की प्रभावना को देखकर आश्चर्य होता है।

देश की आजादी पाने और सुरक्षित रखने के लिए मारने वालों की फौज तो सभी तैयार करते हैं, पर महात्मा गांधी ने मरने वालों की फौज तैयार की थी और उसके ही बल पर भारत को आजाद कर दिखाया था। ईंट का जवाब पत्थर से देने वाले वीर तो बहुत मिलेंगे, पर गांधीजी ने ऐसे वीरों की कतार खड़ी की थी, जो गोली का जवाब गाली से भी न दें। उन्होंने गाली बकने और गोली मारने वालों के विरुद्ध गोली खाने वाले देशभक्तों के बल पर आजादी की सफल लड़ाई लड़ी थी।

जो कार्य गांधीजी ने राजनीति के क्षेत्र में अहिंसा के बल पर कर दिखाया; वही काम जैन अध्यात्म के क्षेत्र में कानजी स्वामी ने ''नो रिप्लाई इज बैस्ट रिप्लाई'' की नीति पर चलकर कर दिखाया। जो काम हम सब दौड़-दौड़ कर नहीं कर पा रहे हैं, वह काम उन्होंने एक जगह बैठकर मात्र दो समय प्रवचन एवं एक समय चर्चा करके कर दिखाया। उन्होंने सदाचारी, शान्त, पर दृढ़श्रद्धानी अनुशासित तत्त्वाभ्यासियों की एक लम्बी कतार खड़ी कर दी है; जिनमें बालक, युवक, प्रौढ़ और वृद्ध पुरुष एवं महिलाएँ सभी हैं।

उनके अनुयायी तो उनके बताए मार्ग पर चलते ही हैं, पर जो लोग उनके जिन कार्यों की आलोचना करते हैं; वे भी आज वही करने लगे हैं। शिविरों की आलोचना करने वाले शिविर लगा रहे हैं, समयसार पढ़ने को मना करने वाले समयसार पढ़ रहे हैं, मंडलों का विरोध करने वाले मंडल बना रहे हैं। विरोध करने वालों का सदा यही हाल रहा है। एक समय जो लोग शास्त्रों को छपाने का विरोध करते नहीं थकते थे, वे आज धड़ाधड़ शास्त्र छपा रहे हैं।

समस्त युग पर जिसकी छाप पड़े, वही युगपुरुष हैं ह्न इस अर्थ में आप सच्चे युगपुरुष हैं।

आज के युग में एक तो कोई 92 वर्ष की उम्र तक पहुँचता ही नहीं, कदाचित् कोई पहुँच भी जाय तो वह कानों से सुनता नहीं, उसे आँखों से दिखता नहीं, वह अर्द्धमृतकसम ही जीता है।

92 वर्ष की उम्र तक भी पूर्णतः सजग अध्ययन, मनन, चिन्तन, आत्मानुभवन, प्रवचन एवं तत्त्वचर्चा में नियमितरत युगान्तरकारी युगपुरुष आपके 119वें पावन जन्म-दिवस पर भगवान् महावीर की पावन स्मृतिपूर्वक मंगल कामना करता हूँ कि आपकी कीर्तिलता और आपके द्वारा प्रतिपादित तत्त्व पंचमकाल के अंत तक फलता-फूलता रहे। ●

02 अप्रैल 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

पाठकों के पत्र...

सब कुछ एक जगह

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल कृत समयसार की **ज्ञायकभावप्रबोधिनी हिन्दी टीका** को पढ़कर श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट, सोनागिर के ट्रस्टी **श्री केशरीमलजी पाटनी** लिखते हैं ह्न

''डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल कृत समयसार की ज्ञायकभाव प्रबोधिनी हिन्दी टीका का सामूहिक स्वाध्याय परमागम मंदिर, सोनागिर में हम सब पिछले चार माह से कर रहे हैं।

वस्तुत: यह कृति सभी के लिये पठनीय, मननीय और अनुकरणीय सिद्ध हुई है। यह कृति तीव्र, सामान्य और मन्दबुद्धि वाले सभी के लिये भावभासन हेतु उपयोगी रही है।

इसमें आचार्य कुन्दकुन्द कृत मूल गाथायें, आचार्य अमृतचंद्र कृत आत्मख्याति संस्कृत टीका एवं आचार्य जयसेन कृत तात्पर्यवृत्ति संस्कृत टीका के महत्वपूर्ण अंश आदि सभी कुछ आ गया है। इसमें डॉ. भारिल्ल कृत गाथा और कलशों का भावगर्भित पद्यानुवाद भी उपलब्ध है।

मुझे लगता है कि इसमें सबकुछ एक जगह उपलब्ध हो गया है। प्रत्येक गाथा व कलश के अन्त में लिखी गई टिप्पणी/भावार्थ में तो सभी का निचोड़ आ गया। मनोयोग से इसका स्वाध्याय करने पर कुछ अस्पष्ट नहीं रहता।

भविष्य में भी आप इसीप्रकार के मूलग्रंथों की टीकायें लिखें ह्न ऐसी हम सबकी मंगल भावना है। डॉ. भारिल्ल के विशेष चिंतन, अविरल लेखन की अनुमोदना करते हुए आपकी दीर्घ आयु की मंगल कामना करते हैं।''

20 माह में 3 संस्करण समाप्त

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल कृत **ज्ञायकभावप्रबोधिनी** हिन्दी टीका सहित **समयसार** के 10 हजार प्रतियों के 3 संस्करण मात्र 20 माह की अल्पावधि में ही समाप्त हो गये हैं।

अब 2 हजार प्रतियों का **परिवर्धित चौथा संस्करण** छपकर तैयार है; इसमें गत संस्करणों से **24 पृष्ठ अधिक** हैं।

672 पृष्ठों के इस संस्करण का **लागत मूल्य 120 रुपये** है; किन्तु दातारों के सहयोग से यह आपको **मात्र 50 रुपये** में ही उपलब्ध हो रहा है।

महावीर जयन्ती के अवसर पर ह्न

उपकार दिवस समारोह

भगवान महावीरस्वामी के जन्म कल्याणक एवं आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की 119 वीं जन्म जयन्ती (उपकार दिवस) के अवसर पर अध्यात्मतीर्थ, आत्म साधना केन्द्र, घेवरा मोड, रोहतक रोड पर दिनांक **13 अप्रैल से 20 अप्रैल,**08 तक आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर एवं पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे का प्रवचनों आदि के माध्यम से लाभ मिलेगा।

कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में होंगे।

आप सभी को पधारकर धर्मलाभ लेने हेतु हमारा भाव-भीना हार्दिक आमंत्रण है। **ह्न संदीप शास्त्री**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

17 से 20 अप्रैल	आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली	महावीर जयन्ती एवं उपकार दिवस
23 से 25 अप्रैल	बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली	समयसार पर सेमिनार
3 मई से 8 मई	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
18 मई से 4 जून	अलीगढ	प्रशिक्षण शिविर
5 जून से 31 जुलाई	विदेश यात्रा*	धर्म प्रचारार्थ
3 से 12 अगस्त	जयपुर	शिक्षण-शिविर
28 अग.से 3 सित.	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
4 से 14 सितम्बर	मुम्बई	दशलक्षण महापर्व

* विस्तृत विवरण पृष्ठ-4 पर देखें।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
फैक्स : (०१४१) २७०४१२७